

रविवार 16 फ़रवरी, 2025

विषय — जीव आत्मा

स्वर्ण पाठ: मत्ती 22: 37

“यीशु ने उससे कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। ”

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 103: 1-4, 13, 18, 20-22

- ¹ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- ² हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- ³ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
- ⁴ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है,
- ¹³ जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।
- ¹⁸ अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं॥
- ²⁰ हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो!
- ²¹ हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके टहलुओं, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!
- ²² हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो। हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मत्ती 4: 23

- ²³ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

2. लूका 5: 17 (से 3rd), 18 (से:), 19-25

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 17 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूशलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ्य उसके साथ थी।
- 18 और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा हुआ था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ रहे थे।
- 19 और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने कोठे पर चढ़ कर और खपैल हटाकर, उसे खाट समेत बीच में यीशु के साम्हने उतरा दिया।
- 20 उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।
- 24 मैं तुझ से कहता हूं, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।
- 25 वह तुरन्त उन के साम्हने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया।

3. मत्ती 14: 22 (से 2nd), 23 (और जब)-33

- 22 और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे।
- 23 ...और सांझ को वहां अकेला था।
- 24 उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा साम्हने की थी।
- 25 और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उन के पास आया।
- 26 चेले उस को झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए! और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे।
- 27 यीशु ने तुरन्त उन से बातें की, और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत।
- 28 पतरस ने उस को उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।
- 29 उस ने कहा, आ: तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।
- 30 पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा।
- 31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?
- 32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई।
- 33 इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत करके कहा; सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है॥

4. मत्ती 17: 1 (यीशु)-9 (से 4th), 14-20

- 1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया।
- 2 और उनके साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुँह सूर्य की नाई चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाई उजला हो गया।
- 3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।
- 4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।
- 5 वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ: इस की सुनो।
- 6 चेले यह सुनकर मुँह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए।
- 7 यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और कहा, उठो; डरो मत।
- 8 तब उन्होंने अपनी आंखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।
- 9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुआओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।
- 14 जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक कर कहने लगा।
- 15 हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उस को मिर्गी आती है: और वह बहुत दुख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।
- 16 और मैं उस को तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।
- 17 यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।
- 18 तब यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्मा उस में से निकला; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया।
- 19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?
- 20 उस ने उन से कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह स को गे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।

5. प्रेरितों के काम 1: 2 (बाद), 3, 7 (से 1st), 8 (तुम्हें प्राप्त होगा) (से), 9-11

- 2 उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया।
- 3 और उस ने दुः ख उठाने के बाद बहुत से पड़े प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।
- 7 उस ने उन से कहा।
- 8 ...जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे।

- ⁹ यह कहकर वह उन के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की आंखों से छिपा लिया।
- ¹⁰ और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए।
- ¹¹ और कहने लगे; हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा॥

6. मत्ती 5: 8

- ⁸ धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

7. लूका 17: 21 (देखो)

- ²¹ ...क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 120: 4-6

आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

2. 30: 19-25

सत्य के व्यक्तिगत आदर्श के रूप में, ईसा मसीह सत्य और जीवन के तरीके को इंगित करने के लिए, सभी गलतियों, बीमारी, और मृत्यु - को रबिनिकल त्रुटि और फटकार के लिए आया था। आत्मा और भौतिक अर्थ, सत्य और त्रुटि के बीच अंतर दिखाते हुए, इस आदर्श को यीशु के संपूर्ण सांसारिक जीवन के दौरान प्रदर्शित किया गया था।

3. 476: 28-32

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है।

4. 310: 18 (हम)-22

हमें सामान्यतः सिखाया जाता है कि एक मानव आत्मा होती है जो पाप करती है और आध्यात्मिक रूप से खो जाती है, - वह जीवित आत्मा खो सकती है, और फिर भी अमर हो सकती है। यदि आत्मा पाप कर सकती, तो आत्मा अर्थात् जीवित आत्मा, आत्मा के स्थान पर शरीर होती।

5. 481: 28-32

जीवात्मा मनुष्य का दिव्य सिद्धांत है और कभी पाप नहीं करता, - इसलिए जीवात्मा की अमरता है। विज्ञान में हम सीखते हैं कि यह भौतिक अर्थ है, न कि जो पाप है; और यह पाया जाएगा कि यह पाप का बोध है जो खो गया है, और पापपूर्ण पाप नहीं है।

6. 273: 24-28

यीशु लहरों पर चले गए, भीड़ को खिलाया, बीमारों को चंगा किया और भौतिक कानूनों के विरोध में मृतकों को उठाया। उनके कार्यों में विज्ञान का प्रदर्शन था, भौतिक बोध या कानून के झूठे दावों पर काबू पाने से।

7. 381: 8-19

कुछ कथित कानून का उल्लंघन करते समय, आप कहते हैं कि खतरा है। यह डर खतरा है और शारीरिक प्रभावों को प्रेरित करता है। हम वास्तव में एक नैतिक या आध्यात्मिक कानून को छोड़कर कुछ भी तोड़ने से पीड़ित नहीं हो सकते। नश्वर विश्वास के तथाकथित नियम आत्मा को अमर होने की समझ से नष्ट हो जाते हैं, और वह नश्वर मन समय, काल, और प्रकार के रोग का विधान नहीं कर सकता, जिसके साथ नश्वर मर जाते हैं। परमेश्वर कानूनविद् है, लेकिन वह भयंकर संहिताओं का लेखक नहीं है। अनंत जीवन और प्रेम में कोई बीमारी, पाप, मृत्यु नहीं है, और शास्त्र घोषणा करते हैं कि हम अनंत भगवान में रहते हैं, चलते हैं, और हमारे पास हैं।

8. 210: 5-18

ईसाई धर्म का सिद्धांत और प्रमाण आध्यात्मिक अर्थों से समझा जाता है। उन्हें यीशु के प्रदर्शनों में दिखाया गया है, - जो सामग्री और उसके तथाकथित कानूनों की अवहेलना करता है बुराइयों को मिटाकर, और मृत्यु को नष्ट करके, "अंतिम शत्रु जो नष्ट हो जाएगा,"।

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्रवाई को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना। यीशु ने एक ही आध्यात्मिक प्रक्रिया के द्वारा बीमारी और पाप को चंगा किया।

9. 477: 6-7

मनुष्य आत्मा के लिए भौतिक आवास नहीं है; वह स्वयं आध्यात्मिक है।

10. 204: 30 (आस्था)-6

यह विश्वास कि ईश्वर पदार्थ में रहता है, सर्वेश्वरवादी है। त्रुटि, जो कहती है कि आत्मा शरीर में है, मन पदार्थ में है, और अच्छाई बुराई में है, इसे अनकहा करना चाहिए और इस तरह के बयानों से बचना चाहिए; नहीं तो परमेश्वर मानवजाति से छिपा रहेगा, और नश्वर यह जाने बिना पाप करेंगे कि वे पाप कर रहे हैं, आत्मा के बजाय पदार्थ पर निर्भर रहेंगे, लंगड़ापन से ठोकर खाएंगे, पियक्कड़पन से गिरेंगे, बीमारी से भस्म होंगे, - यह सब उनके अंधेपन के कारण होगा, परमेश्वर और मनुष्य के विषय में उनकी झूठी समझ के कारण।

11. 9: 17-21 (से 1st)

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी।

12. 334: 10 (यह)-20

अदृश्य मसीह तथाकथित व्यक्तिगत इंद्रियों के लिए अगोचर था, जबकि यीशु एक शारीरिक अस्तित्व के रूप में दिखाई दिया। अनदेखी और देखा, आध्यात्मिक और भौतिक, शाश्वत मसीह और शारीरिक यीशु का मांस में प्रकट होने का यह दोहरा व्यक्तित्व, मास्टर के स्वर्गारोहण होने तक जारी रहा, जब मानव, भौतिक अवधारणा, या यीशु गायब हो गया, जबकि आध्यात्मिक आत्म, या मसीह, दैवीय विज्ञान के अनन्त क्रम में मौजूद है, दुनिया

के पापों को दूर कर रहा है, जैसा कि मसीह ने हमेशा किया है, इससे पहले भी मानव यीशु नश्वर आंखों के लिए अवतार था।

13. 171: 4-16

भौतिकता के आध्यात्मिक विपरीत के विवेक के माध्यम से, यहां तक कि मसीह, सत्य के माध्यम से, मनुष्य दिव्य विज्ञान की कुंजी के साथ स्वर्ग के द्वार को फिर से खोल देगा जो मानव मान्यताओं ने बंद कर दिया है, और खुद को निष्कलंक, ईमानदार, शुद्ध और स्वतंत्र पाएगा, नहीं उसे अपने जीवन या मौसम की संभावनाओं के लिए पंचांगों से परामर्श लेने की आवश्यकता है, यह जानने के लिए कि वह कितना आदमी है, मस्तिष्क विज्ञान का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं है।

मनुष्य सहित ब्रह्मांड पर मन का नियंत्रण अब एक खुला प्रश्न नहीं है, बल्कि विज्ञान है। यीशु ने बीमारी और पाप को ठीक करने और मृत्यु की नींव को नष्ट करके दिव्य सिद्धांत और अमर मन की शक्ति का वर्णन किया।

14. 307: 25 (सच)-30

सत्य का कोई आरम्भ नहीं है। दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

15. 208: 20-24

आइए हम वास्तविक और शाश्वत के बारे में जानें, और आत्मा के राज्य, स्वर्ग के राज्य की तैयारी करें - सार्वभौमिक सद्भाव का शासन और शासन, जिसे खोया नहीं जा सकता और न ही हमेशा के लिए अनदेखा किया जा सकता है।

16. 590: 1 (साम्राज्य)-3

स्वर्ग के राज्य। दिव्य विज्ञान में सामंजस्य की प्रबलता; अनियंत्रित, शाश्वत और सर्वशक्तिमान मन के दायरे; आत्मा का वातावरण, जहाँ जीवाश्म सर्वोच्च है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6